Production of Tapioca and Maize

595. Shri Jashvant Mehta: Will the Minister of **Food and Agriculture** be pleased to state:

(a) the annual total production of tapioca and maize in India;

(b) whether it is a fact that the Indian Council of Agricultural Research has taken up a scheme for growth of hybrid maize in collaboration with Rockefeller Foundation; and

(c) if so, the progress made in this connection, so far?

The Deputy Minister in the Ministry of Agriculture (Shri Shahnawaz Khan): (a) The total production of Maize during 1964-65 and that of Tapioca during 1962-63 in the country was 4558 thousand tonnes and 1799 thousand tonnes respectively.

(b) Yes.

(c) Nine hybrids of maize have been evolved so far under the Co-ordinated Maize Breeding Scheme and these have been released for general cultivation on a regional basis. 12,276 quintals of seed of these hydbrids was produced under the aegis of the National Seeds Corporation during 1964-65 which would be adequate to cover an area of 2,04,602 acres.

By-passes on West Coast Road

597. { Shri A. V. Raghavan: / Shri Pottekkatt:

Will the Minister of **Transport** be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 74 on the 8th September, 1964 and state the progress since made in the construction of by-pass roads at Badagara, Tellicherry and Mahe on the West Coast Road?

The Deputy Minister in the Ministry of Transport (Shri Mohiuddin): The position in respect of the byepass roads at Badagara, Tellicherry and Mahe on the West Coast Road in Kerala State is indicated below:—

Badagara byepass.—The estimate for the construction of the proposed byepass is under preparation by the State Government. The acquisition of the land is in progress.

Tellicherry byepass.—The estimate for the acquisition of land is under preparation by the State Government.

Mahe byepass.—This is not in the approved programme for the development of the West Coast Road in Kerala. The question of inclusion of the work will be considered in the Fourth Plan subject to the availability of funds.

12.09 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

REPORTED EXPLOSION IN A PETROL WAGON NEAR RANIGANJ RAILWAY STATION

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) : मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर रेलवे मन्त्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह इस बारे में एक वक्तव्य दें :—

रानीगंज रेलवे स्टेशन के निकट पैट्रोल के एक वैगन में विस्फोट, जिसके परिणामस्वरूप दो व्यक्तियों की मृत्यु हुई और लगभग 330 व्यक्ति घायल हुये ।

रेलवे मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : 12 अगस्त, 1965 को सायंकाल चार बजे के कुछ ही बाद बजबज स्पेशल नं० 270 डाउन, जिसमें पैट्रोल के 18 माल डिब्बे थे, जब निमचा रेलवे स्टेशन के चेतावनी सिगनल पर पहुंच रही थी, तब निमचा के एवजी केबिन सहायक स्टेशन मास्टर ने देखा कि गाड़ी के ब्रेकवान से लगे पांचक

टंकी माल डिब्बे में आग लग गयी है। उसने ड्राइवर को तुरन्त लाल सिगनल दिखाया। उसी समय गाड़ी के गार्ड ने पैट्रोल की गन्ध पाकर और अजीब तरह की आवाज सुन कर वैकुअम ब्रेक लगा दिया और गाड़ी रोक दी। गाड़ी के अगले भाग को, जिसमें 51 माल डिब्बे थे, पिछले भाग से तुरन्त अलग कर दिया गया। आसनसोल और रानीगंज से फायर ब्रिगेड भेजने के लिए फौरन सूचना भेजी गयी।

लगभग 4 बज कर 40 मिनट पर टंकी माल डिब्बा फट गया। इस डिब्बे के दोनों ओर दो अन्य टंकी माल डिब्बे, जिनमें पैट्रोल भरा था, को भी क्षति पहुंची, क्योंकि बहुत गर्म हो जाने के कारण उन्हें अलग नहीं किया जा सका था। आसनसोल और रानीगंज से जो फायर ब्रिगेड मंगाये गये थे वे क्रमशः लगभग 5 बज कर 10 मिनट पर और 5 बज कर 25 मिनट पर घटनास्थल पर पहुंच गये। फायर ब्रिगेडों की पहली पंक्ति जिसमें 2 विसारक (डिफ्यूज़र्स) लगे थे 5 बज कर 30 मिनट पर चालू की गयी और 9 बजे तक आग बिल्कुल बुझा दी गयी। आग आसपास की झोंपड़ियों और निमचा कोयला साइडिंग में भी पहुंच गयी थी। टंकी माल डिब्बा साढ़े 11 बजे तक ठंडा कर दिया गया।

इस विस्फोट में 3 व्यक्ति मर गये और 380 व्यक्ति घायल हो गये जिनमें से अधिकांश बाहरी लोग थे और वहां आग देखने के के लिए इकट्ठे हो गये, थे। घायलों में रानीगंज फायर स्टेशन का एक फायर स्टेशन अफसर था इनके अलावा 3 रेल कर्मचारी भी घायल हुए। मरहम-पट्टी के बाद 54 घायल व्यक्तियों को छुट्टी दे दी गयी और 329 व्यक्तियों को विभिन्न अस्पतालों में भरती किया गया। 19 अगस्त, 1965 तक 241 व्यक्तियों को अस्पताल से छुट्टी दी जा चुकी है और 88 व्यक्तियों को, जिनमें एक वह व्यक्ति भी शामिल है जो सख्त घायल हो गया था, अस्पताल में रखा गया है और उनकी हालत में सुधार हो रहा है।

रेलवे को लगभग 59,550 रुपये की हानि का अनुमान है। 78,000 लिटर पैट्रोल नष्ट हुआ जिसकी कीमत 66,300 रुपये है। लगभग 3,36,000 रुपये की सम्पत्ति बचा ली गई।

सीनियर अफसरो की एक जांच समिति बनाई गई है जिसने अपनी पहली बैठक 16-8-1965 को की। मामले की अभी जांच हो रही है। अभी तक यह पता नहीं लगा है कि आग लगने की वजह क्या थी लेकिन ऐसा सन्देह नहीं किया जाता कि यह घटना तोड़-फोड़ की कार्रवाई के कारण हुई।

श्री हुकम चन्द कछवाय : इस प्रकार की जो रेल दुर्घटनायें होती हैं, जैसे इंजिन का पटरी से उतर जाना, पटरी का उखाड़ा जाना, इनमें क्या विदेशी तत्वों का भी हाथ होता है और क्या सरकार ने इन तत्वों पर कड़ी निगाह रखी है? जिन रेलों से इस तरह की शिकायतें आ रही हैं, उन रेलों पर इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए क्या सरकार सख्त कदम उठाने का विचार कर रही है? जो घायल हुए हैं या जिन को चोट लगी है उनको क्या कोई मुआवजा दिया गया है सरकार की ओर से यदि हां तो क्या दिया गया है या कितना देने का विचार है?

अध्यक्ष महोदय : पहले सवाल का जवाब आ चुका है, दूसरे का दे दिया जाए यानी जो घायल हुए हैं, उनको क्या कुछ इमदाद दी गई है?

डा० राम सुभाग सिंह : जैसा मैंने मूल प्रश्न के उत्तर में कहा है बाहर के लोग देखने के लिए आए थे और वहां . . .

एक माननीय सदस्य : रेलवे का कोई नहीं था?

डा० राम सुभाग सिंह : रेलवे का एक कर्मचारी था, उसको थोड़ी सी चोट लगी। वह अच्छा हो गया और अस्पताल से बाहर

[डा० राम सुभग सिंह]

चला गया है । चूंकि वे बाहर के लोग थे रेल से सफर नहीं करते थे और वह मालगाड़ी थी इसलिए अभी जांच सारी बातों की हो रही है । अभी कुछ नहीं किया गया है ।

श्री ओंकार लाल बेरवा (कोटा) : तीन आदमी जो मारे गये हैं वे रेल कर्मचारी थे या बाहर के थे अगर बाहर के थे तो क्या रेल कर्मचारियों को जो फैसिलिटीज मिलती हैं उनको भी दी जायेंगी या बाहर के जो सिविलियन हैं, उनको जो दी जाती हैं वे दी जायेंगी ?

डा० राम सुभग सिंह : अगर कोई रेल से चलता है और इस तरह की किसी दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो जाती है तो जरूर रेलवे देने को तैयार है । लेकिन जो तमाशबीन इकट्ठे हो गए थे, अड़ोस पड़ोस से इकट्ठे हो गए थे और आग भी काफी पहले लगी थी और यह वाजिब भी नहीं था कि ये सब लोग वहां जायें, इसलिए इन सारी बातों को . . . (**इंटरप्शंज**)

अध्यक्ष महोदय : अगर किसी जगह ऐसा हो जाए कि पास में ही लोग खेत में या कहीं और काम कर रहे हों, देखने के लिए न आए हों, और यकलख्त इस तरह की दुर्घटना हो जाए तो उस सूरत में क्या जिम्मेदारी आएगी ?

डा० राम सुभग सिंह : जांच हो रही है इस के बारे में ।

Shri Surendra Pal Singh (Bulandshahr): What specific steps were taken by the Railway staff concerned to give adequate warning of the impending danger to those spectators who had gathered at the scene of the incident and why was no attempt made to disperse them from that area?

Dr. Ram Subhag Singh: This is a very small Station and the train was, as I said, near the outer signal. As it is a small Station, there was not much staff there and so it may not have been possible at that particular moment to give proper warning. But the Station Master, who was there, telephoned to Asansol as well as Raniganj and the fire brigades which came there might not have allowed outsiders.

श्री यशपाल सिंह (केराना) : विस्फोट का कारण क्या है और कौन लोग इसके लिए जिम्मेदार हैं और क्या उनके खिलाफ एक्शन लिया गया है ?

अध्यक्ष महोदय : यह तहकीकात के पश्चात पता चलेगा ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : जैसे बताया गया है, झोंपड़ों में आग लगी और लोग मारे गए वहां पर, उसके बारे में कुछ नहीं बताया गया है ।

श्री कपूर सिंह (लुधियाना) : किसी पर शक है क्या ?

Shri Daji (Indore): Has it come to the notice of the Government that, among those who were killed or injured or suffered damages, there were also persons who were living in the farms nearby and if so, has the Government taken steps to compensate or help them at least?

Dr. Ram Subhag Singh: There were persons who were living near that railway track and there may have been some outsiders also. But so far no decision has been taken and the whole matter is being gone into by an Inquiry Committee.

श्री हुकम चन्द कछवाय : निर्णय कब तक हो जाएगा ?